Vol 5 Issue 10 July 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

Review Of Research

गढवाल हिमालय के जनपद चमोली में वन एंव वन औषिधियो का एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ.गुरूप्रसाद थपलियाल [1] , प्रो, अरबिन्द सिंह [2]
[1]असिंस्टेट
[2]शोध छात्र भूगोल विभाग हे. न. ब. गढवाल केन्द्रीय विश्व विद्यालय श्रीनगर गढवाल उत्तराखण्ड .

प्रस्तावना

वन प्राचीन काल से ही मानव के ज्ञान विज्ञान के स्रोत रहे हैं। संस्कृति के प्रारम्भिक चरण में मानव पूर्णतया वनो पर निर्भर था। वह अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति वनों से करता था। भोजन के लिए फल, वस्त्र के लिए छाल, पत्तियाँ, रोग निदान के लिए वन औषिधियां ,जड़ी बूटियां सुरक्षा के लिए काष्ट उपकरणों का प्रयोग करता था। वर्तमान समय में मानव वनों से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त करता है। वन का तात्पर्य वृक्षों, झाड़ियों, लताओं, घासों तथा तरह–तरह की वनस्पतियों के

प्राकृतिक समूहों, जडीबूटियों आदि से है। हिमालय प्रदेश में ऊँचाई एवं जलवायु सम्बन्धी विशेषताओं के कारण कई क्षेत्रों मेंएक ही किस्म की वनस्पतियॉ पायी जाती है।

अध्ययन क्षेत्र .जनपद चमोली 29°26″ उत्तरी अक्षांश, से 31°50″ उत्तरी अक्षांश तथा 77°50″ पूर्व अक्षांश से 8008″ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है, चमोली जनपद 8030 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है। जिसकी अधिकतम ऊँचाई समुद्र सतह से 7060 मीटर सतोपन्थ एंव न्यूनतम ऊंचाई 900 मीटर है। जनपद चमोली में 6

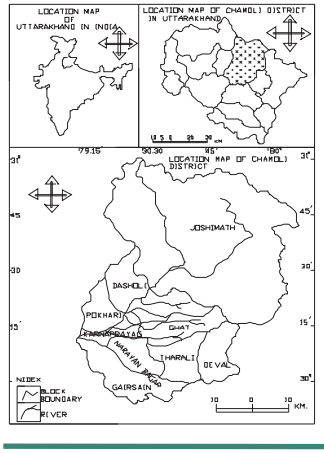

तहसीलें, जिनमें 1154 आवाद ग्राम 78 गैर आवाद ग्राम है, वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 391605 है। चमोली जनपद में 45 प्रतिशत भू–भाग में वनों एंव उद्यानो,बागो,बगीचो, झाणियो का विस्तार पाया जाता है।

विधितन्त्र – प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार क्षेत्र भ्रमण से एकत्रित किये गये। द्वितीय स्रोत्रों में वन विभाग से प्राप्त किया गया विषय वस्तु के सामान्यीकृत विश्लेषण हेतु अध्ययन की ईकायें विकास खण्ड बनाये गये है।

वन– हिमालय क्षेत्र प्राचीन काल से ही प्राकृतिक वनस्पतियों के लिए धनी रहा है। जनपद चमोली अन्य भागों की तुलना में वन कम है। चमोली जनपद में 45 प्रतिशत भू–भाग में वनों का विस्तार पाया जाता है। जनपद में वनों की उपलब्धता में जलवायु मुख्य कारण हैं। जनपद में प्रमुख वन प्रजातियों में देवदार, बांज, बुरांश, चीड., शीशम, साल, मोरू, तथा अल्पाइन बुग्याल उच्च क्षेत्रों में पाये जाते है। चमोली जनपद में वर्ष 2012–13 में कुल वन क्षेत्र 127342हे. है। जो जनपद चमोली के 34 प्रतिशत भाग है। तथा उद्यानो,बागो,बगीचो, झाणियो का विस्तार 40500 हे. में है। जो जनपद चमोली के 11 प्रतिशत भाग है।

Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

जनपद चमोली के वन,उद्यानो,बागो,बगीचो, झाणियो का विस्तार 45 प्रतिशत भाग है। जनपद के सबसे अधिक वन भूमि विकास खण्ड घाट में 6839 हे. क्षेत्र है जो विकास खण्ड घाट के 48 प्रतिशत भाग है। जनपद के कम वन भूमि विकास खण्ड जोशीमठ में 45855 हे. क्षेत्र है जो विकास खण्ड जोशिमठ के 18 प्रतिशत भाग है। विकास खण्ड, नारायणबगड में उद्यानो,बागो,बगीचो, झाणियो का विस्तार सबसे अधिक 14 प्रतिशत है। तथा सबसे कम उद्यानो,बागो,बगीचो, झाणियो का विस्तार विकास खण्ड घाट में 6 प्रतिशत है। जनपद में वनों का विस्तार घाटियों की अपेक्षा मध्य मध्य भाग में अधिक है जनपद के विभिन्न विकास खण्डों के अनुसार वन उद्यानो, बागो, बगीचो, झाणियो भूमि का उपयोग निम्नलिखित तालिका 1.1 में स्पष्ट किया गया है।

देवदार के वन

तालिका 1.1 जनपद चमोली में विकास खण्डों के अनुसार वन उद्यानो, बागो, बगीचो, झाणियो के अर्न्तगत भूमि हे. में 2013

क.म.	विकास खण्डो के नाम	वन क्षेत्र .हे.	प्रतिशत	उद्यानो,बागो,झाडियो का क्षेत्र. हे.	प्रतिशत
1	जोशीमठ	45855	18	17625	7
2	कर्णप्रयाग	7163	31	3298	11
3	दशोली	19362	45	3691	9
4	घाट	6839	48	793	6
5	नारायणबगड	4776	25	2699	14
6	गैरसैण	14834	38	2709	7
7	थराली	7536	46	1244	8
8	देवाल	11494	44	1458	6
9	पोखरी	9483	34	3983	14
10	योग जनपद का	127342	34	40500	11

जनपद चमोली में वनों की व्यवस्था एंव उनके सुप्रबन्धन के लिये वन विभाग तथा रेंज कार्यलयों की व्यवस्था है। लेकिन वर्तमान समय में बढ़ती हुयी जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिये वनों को काटकर खेती का विकास, सड़क निर्माण, पर्यटन का विकास, पशुओ द्वारा अनियंत्रित चराई, वाढ, वनाग्नि, भू–स्खलन ,वनो से चारापत्ति लाने आदि कारणों से जनपद में वनों का विनाश हो रहा है। जलवायु दशाओं में भिन्नता होने के कारण यहाँ के वनों में काफी अन्तर है। अध्ययन क्षेत्र मे पाये जाने वाले वनों को भू–आकृति एवं जलवायु की दशाओं के आधार पर निम्न हैं

उपोष्ण कटिबन्धीय वन – जनपद चमोली में 900मी0 से 1200 मी. की ऊँचाई तक उपोष्ण कटिबन्धीय वन वनस्पति पायी जाती है। इसमें मुख्य वृक्ष आम, आडू, लींची, सेमल, शीशम, खड़ीक , तून, भीमल, जामुन, पीपल, बरगद, डैंकण, खैर हल्दू, ग्वीराल, रीठा, कंटीली झाड़ियाँ, नागफनी, रामबांश, सुल्ला, आदि वृक्ष मिलते हैं। जिनसे बहुमूल्य इमारती लकड़ी प्राप्त की जाती है। इन वृक्षों की सामान्य ऊँचाई 15 मी. से 30 मी. तक पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत गौचर, सिडोली, सिमली,धार ढूंगरी, उम्मटा, कर्णप्रयाग, सोनला, नन्दप्रयाग, घाट, आदि

Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

प्रमुख क्षेत्र हैं।

शीतोष्ण कटिबन्धीय वन – जनपद चमोली में 1200 मीटर से लेकर 1800 मीटर तक शीतोष्ण कटिबन्धीय वन पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में चीड़ के वृक्षों की बाहुल्यता है। अधिक वर्षा वाले उत्तरी ढालों पर बांज, बुराँश, काफल, सांदण, खूर्स, अचार, अखरोट, आड़ू, खुमानी, सेब, नाशपाती, नींबू प्रजाति के वृक्ष पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त मोरू, थरमोर, कन्डारा, आदि चौड़ी पत्ती के वृक्ष भी पाये जाते हैं। इन वृक्षों की लकड़ियों का उपयोग फर्नीचर कृषि यंत्रों के लिये तथा पत्तियों और पशुओं के चारे क रूप में खाद बनाने के लिये उपयोग में लाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत जोशीमठ, थराली, गैरसैण, मोंल्टा, पूल्ना, पाखी, मलेठी,थापली, मेहलचौरी, बनेला,देवाल, लोल्टी, देवसारी, कुलसारी, आदि प्रमुख क्षेत्र हैं।

अल्पाइन क्षेत्रीय वनस्पति– जनपद चमोली में 1800 मीटर से 2800 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अल्पाइन क्षेत्रीय वनस्पति पायी जाती है। इन क्षेत्रों में बांज, बुराँश, काफल, कैल, देवदार, सुराई, आदि मुख्य वृक्ष हैं। इन वृक्षों की ऊँचाई 15 से 35 मीटर तक पायी जाती है, अध्ययन क्षेत्र के नीति, माणा, कोट, तोलमा, सूकी, मलारी आदि मुख्य क्षेत्र पाये जाते है। 3200 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बुग्याल क्षेत्रो का विस्तार प्रारम्भ होता है। जहाँ शीतकाल में बर्फ गिरती है। ग्रीष्मकाल में अधिकांश बर्फ पिघलने के बाद मखमली घासें उग जाती है जिसे बुग्याल कहते है।

तालिका संख्या 1.2– जनपद चमोली में प्राकृतिक वनस्पति का वर्गीकरण

मुख्य भाग	उपभाग	ऊँचाई मीटर	मुख्य वनस्पति
उष्ण कटिबंधीय	मिश्रित पतझड़ वाले वन, तथा झाड़ी वाले वन	1200मी. से कम	तनु, जामुन, असीन, सांधण आंवला, सेमल, हल्दू, करोंदा, धौलू, तुगेर, मालू
उपोष्ण कटिबंधीय वन	चीड़ वन	1200–2000मी.	चीड़, बांज, बुराश, काफल, अंयार
आर्द्र शीतोष्ण कटिबंधीय वन	आर्द्रटेम्परेट	2000– 2700 मी.	पांगर, यापत, गोरक, सिलवरफर
शीतोष्ण शंकु घाटी वन	पहाड़ी रिगांल	2700 से3000 अधिक	गोलरिगांल, देवरिगांल जुमरारिगांल
अल्पाइन वन	बुग्याल झाड़ीनुमा	3000 से अधिक	कुंज, घास, मखमली, घासें जड़ी बूटियां

चारागाह –

जनपद चमोली में चारागाह भूमि मुख्य रूप से वन क्षेत्रों के उच्च अल्पाइन तथा ग्रामीण बसाव के समीपस्थ वाले क्षेत्रों मे पायी जाती है। ग्रामीण जनसमुदाय द्वारा घास के लिये भूमि खाली छोड़ देते है। जिसमें पशु अपनी स्वतंत्रता से चरते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में चारागाह सर्वाधिक मिश्रित कृषि के साथ मिलते है।ये पशुओं के लिये मौसमी क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों पर घास व वनस्पति की कम मात्रा में बढ़ती है। जिस कारण ये बंजर भूमि सी दिखती है। जनपद चमोली में जो गाँव मध्यम ऊँचाई वाले भू–भाग पर बसे हुये हैं। उन गाँवों पर इस प्रकार की भूमि व पशुचारण क्षेत्र की अधिकता मिलती है। तथा जिन गाँवों का बसाव स्थान अधिक ऊँचाई वाले भू–भागों पर है।वहाँ वन क्षेत्रों में पशुचारण किया जाता है। जनपद के विकास खण्ड जोशीमठ तथा नन्दप्रयाग के कुछ गांवो में मानव अस्थायी पशुचारण करते हैं। ये गांवो नकहोली, सिमली, सीनार, भटयाना, कोठरा, चोपटा, झिझोनी, कलसारी, लोसारी, नन्दकेसरी, नौटी, गैरसैण, नन्दप्रयाग, घाट, कुरूड, थिरपाक, तेफना, लांसी, आदि गाँवों है। जनपद चमोली में मुख्यतया तथा दो प्रकार के चारागाह क्षेत्र हैं। स्थाई चारागाह क्षेत्र तथा अस्थाई चारागाह क्षेत्र है।

Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

1–रूपकुण्ड चारागाह

2–बेदनी चारागाह

3–गौरसो चारागाह

स्थाई चारागाह क्षेत्र– जनपद चमोली के ऊँचाई वाले भू–भागों के गौरसो, कुवांरीपास, रूद्रनाथ, बेंदनी बुग्याल, संतोपंथ, भेटी, नीति, माणा, बद्रिनाथ चारागाह क्षेत्र, तथा कुछ क्षेत्र जो गाँव वाले वर्ष के छः महीने पशुचारण के लिये छोड़ देते हैं। उन गाँवों में कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, घाट, नारायणवगड, थराली, देवाल, जोशीमठ, पोखरी,आदि है। गाँवों के लोग ग्रीष्म काल इन चारागाहों क्षेत्रों मे भेड़, बकरी, भैंस, घोड़े, तथा गायों को चुगाने के लिये ले जाते हैं। यहाँ पशुचारण मई से सितम्बर तक किया जाता है। सितम्बर माह के बाद ये पशुपालक घाटियों में प्रवास करने लग जाते हैं। शीतकाल में यहाँ बर्फ पड़ जाती है जिससे पशुचारण नहीं किया जाता है।

अस्थाई चारागाह क्षेत्र– जनपद चमोली में अस्थाई चारागाह क्षेत्र सभी स्थानों पर देखने को मिलता है। क्योंकि कृषक कृषि फसल कटने के बाद इन स्थानों पर पशुचारण कराते हैं। ये क्षेत्र अस्थाई चारागाह क्षेत्र है। इन अस्थाई चारागाह क्षेत्रों में ग्रामीण मुख्य रूप से गाय, बैल, भेड़, बकरियां द्वारा ही पशुचारण कराया जाता है। जनपद चमोली में वर्ष 2012–13 में चारागाह 4623 हे. क्षेत्र है। जो प्रतिवेदित क्षेत्र का 1.96 प्रतिशत है।

तालिका संख्या 1.3– जनपद चमोली में प्रमुख बुग्याल तथा चारागाह क्षेत्र उनकी ऊँचाई (मीटर में)

क्र.सं.		ऊँचाई मीटर में
1	सतोंपंथ	3657
2	बेदनी	3560
3	गौरसो	3090
4	कुवारीपास	2939
5	रूद्रनाथ	2939

वन औषिधियां– भारत वर्ष मे पाये जाने वाली 45000 प्रजातियों में ये 50 प्रतिशत से अधिक वन औषिधियां की प्रजातियां हिमालय क्षेत्र में पायी जाती है। इन में से 214 प्रजातियां संकट ग्रस्त की श्रेणी में पहूंच गयी है। उत्तराखण्ड में प्राणदायनी औषधि–पौधो का भण्डार है। इनका इतिहास यहाँ के निवासियो से भी प्राचीन है। वन विभाग तथा कुछ स्वयं सेवी संस्थायें इन जडी–बूटियो के संरक्षण का दायित्व

Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

संभाला है। शीतोष्ण, अल्पाइन तथा उप अल्पाइन क्षेत्र की अनेक औषधि पादप प्रजातियों का अविवेकपूर्ण एंव अवैज्ञानिक ढंग से दोहन किया जा रहा हैं। जिसके फलस्वरूप अनेक औषधि पादप प्रजातियाँ लुप्त हो गयी है तथा कुछ लुप्त होने कें कगार पर है। उत्तराखंण्ड प्रदेश में जड़ी बूटियो की खेती के विकाश के लिये जनपद स्तर पर वर्ष 1980 में सहकारी संधो की स्थापना की गयी है। जनपद चमोली में विश्व प्रशिद्व फूलो की घाटी है। जहां कई किस्म के फूल तथा औषिधियों उगती है। जनपद चमोली में वन औषिधियां का उपयोग वैद्यो तथा स्थानीय लोगो जिनको औषिधियों की जानकारी हे। वे औषिधियों का उपयेाग रक्तशेघक,जोडो का दर्द ,पेटदर्द, उल्टी, पेचिस, शक्तिवर्घक, त्वचारोग,नेत्र विकारो, घाव भरने के लिये आदि अनेक बिमारियो के उपचार हेतु करते है। जनपद चमोली में मुख्य वन औषिधियां निम्नलिखित है।

1–किडाजडी वन औषिधियां 2– फूलो कि घाटी में वन औषिधियां

तालिका संख्या 1.4– जनपद चमोली में मुख्य वन औषिधियां

क्रम स.	स्थानीय नाम	वानस्पतिक नाम	ऊँचाई मी.	क्रम स.	स्थानीय नाम	वानस्पतिक नाम	ऊँचाई मी.
1	अखरोट	Jungals regi	1000.1600	21	बन ककडी	Podophyllm Hexandraum	2800.4000
2	आंवला	Ambhina Officinalis	900मी तक	22	अतीस	Aconitum heterophyllum wall	900.1200
4	तैडू	Discorea Bulbifera	900.1500	23	चौरू	Angelica glauca edgew	2800.3500
6	काफल	Myrica Nagi	1400.2100	24	बालछडी	Arnebia benthamii	2800.3500
7	किनगोड	Adina Cordifolia	900.1800	25	सिलफोडी	Bergenia ciliata	3000.3200
8	केदार पाती	Ocimun Americamum	1000.1600	26	कालाजीरा	Carum carvi	2800.3500

Volume - 5 | Issue - 10 | July - 2016

9	फाफरा	fagopyrum	1200से 1800	27	हथाजडी	Dactylorhiza hatagirea	2800.3500
10	खैर	Acacia Catechu	1000	28	किडाजडी	yarsagaumba	900.3800
11	गान्ध्रायण	Hereclium Canddance	1800.3300	29	जटामांसी	Nardostachys jatamansi	900.1800
12	गुगल	Commiphora Wightii	3000.3800	30	अजमोदा	Apium Teplophyllum	1200.2400
13	जम्बू	Alium Valendum	1400.3000	31	अमलीच	Umariseama Tortuos	1800.3000
14	डैकण	Syzygium Cumini	900.1500	32	सतवा	Paris Polphylla	1800.3100
15	तिमला	Ficus	1000.1800	33	इन्दवण	Trichosanthes	800.2000
16	तुलसी	Ocimum Sanctum	2700.3600	34	मंजीठा	Rubimanjith	1000.2900
17	रीठा	Spindus Amarginatus	1000.1500	35	शहतूत	MorusAlba	800.1500
18	बेल	Acgle Marmelos	1200	36	ईन्द्रजटा	Corydalis meifolia	2100.3600
19	भोज पत्र	Betula utilis	2400.3600	37	पीलीजडी	Thalictrum foliosum	2800.3200
20	मेंहन्दी	Lawsonia Inermis	1000.1800	38	बज्रदन्ती	Potentilla Cuneata	2500.4000

निकर्ष

जनपद चमोली में जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिये वनों को काटकर खेती का विकास किया, सड़क निर्माण किया, पर्यटन का विकास होना, पशुओ द्वारा अनियंत्रित चराई,वाढ,वनाग्नि, भू–स्खलन,वनो से चारापत्ति लाने आदि कारणों से जनपद में वनों का विनाश हो रहा है। बुग्यालो तथा अन्य स्थानों पर जहाँ औषधीय पौधे है उनका विनाश हो रहा हैं। फलस्वरूप अनेक औषधीय पौधे लुप्त हो गये है, कुछ लुप्त होने के कगार पर हैं तथा कुछ के अस्तित्व पर संकट है। गाजर घास जैसे खर पतवार तीव्र गति से इन पौधो को नष्ट कर रहे है। स्थानीय लोगो द्वारा बर्बरता पूर्वक इन पौधो का दोहन किया जा रहा है। अनियमित पशुचारण से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहे है। केन्द्र एंव राज्य सरकारें औषधीय पौधो के संरक्षण के प्रति उदासीन हैं। वर्तमान समय में इनके संरक्षण एंव खेती की चर्चा केवल सेमिनार, शोधपत्रो, पत्र–पत्रिकाओं, कार्यशालाओं एंव गोष्ठियों में की जा रही है जिसका कोई व्यावहारिक लाभ नही हैं। ग्रामीण स्तर पर वन औषधियो का संरक्षण एंव सुरक्षा की जिम्मेदारी निश्चित की जानी चाहिऐ।

सुक्षाव

1 जनपद चमोली में जड़ी बूटियो की खेती के विकास करने की अपार संभावनायें एवं अनुकूल जलवायु दशायें उपलब्ध हैं। जनपद में ऊँचाई के आधार पर जलवायु के अनुरूप पौधों का विकास करके सहकारी विभाग द्वारा जनता में प्रेरणा एवं जागृति लाना चाहिए। लोगों को इसके लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। विभिन्न उँचाई पर वृक्षों की कौन–कौन सी प्रजाति उगाई जाए इस सम्बन्ध में शोधकार्य की जानकारी क्षेत्रवासियों को उपलब्ध करायी जाए तथा सेमिनार एवं संगोष्ठियाँ आयोजित की जाए जिससे विशेषज्ञों से मिली जानकारी का जड़ी बूटियो के विकास की सही जानकारी ग्रामीण को प्राप्त हो सके।

2 जनपद चमोली के 1000 मीटर से कम ऊँचाई वाले भागों में आम, लीची, नींबू, अंगूर, अनार, अमरूद, केला, पपीता आदि विभिन्न प्रजातियों के फल पैदा हो सकते हैं। इसी तरह 1000 मीटर से 1800 मीटर तक ऊँचाई वाले जलयुक्त भूमि पर नींबू प्रजाति के फलों की पेटियां विकसित की जा सकती है। इसमें मुख्य रूप से माल्टा का उत्पादन अच्छे रूप से किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अखरोट, सन्तरा, आड़ू, नासपाती आदि फलों के उत्पादन की काफी सम्भावनायें हैं।

3 जनपद चमोली के 1800 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले भागों में जड़ी बूटियो की खेती का विकास किया जाना चाहिए।

4 जनपद चमोली में न्याय पंचायत स्तर पर जड़ी बूटी संचल केन्द्रों की स्थापना की जाय जनपद में विपणन भंडारण, मिट्टी की जाँच सिंचाई सुविधा का विकास किया जाना चाहिए।

5 क्षेत्र के सामाजिक आर्थिक विकास के लिये जड़ी बूटी उद्योगो की स्थापना की जाय।

REFRENCES.

1.Bahadur, J. ¼2004½] Himalayan Snow And Glacier Associated Environmental Problem Progress And Prospects, Concept Publication Company, New Delhi,
2.Bose, S.C. ¼1972½] Geography Of The Himalaya, National Book Trust, N. Delhi,
3.Gairola, V.K. ¼1990½, Structure And Tectories of The Garhwal Himalayan Or Ogeri And Global Tectories (A.K. Sinha) Oxford I.B.H. Publishing Co. Pvt. Ltd.
4.G.P. Thapliyal ¼1995½, Forest Resources Depletion And Management In Western Garhwal Himalaya Thesis H.N.B.G.U. Unpublished,
5.Nityananda Kumar ¼1989½] The Holy Himalaya A Geographical Interpretation Of Garhwal Daya Publication Delhi,
6.Tiwari, P.C. ¼1995½] Natural Resources And Sustainable Devlopment In Himalaya's, Shree Almora Book Depot, Almora,

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org